Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M. A semester - 1 Philosophy CC-04
Indian and western Ethics

"Stevenson: Emotive meaning of ethical terms." 1

स्टीवेंसन ने अपनी किताब 'एथिक्स एण्ड लैंग्वेज' में सम्वेगवाद का समर्थन किया है।

स्टीवेंसन के विचार में व्यक्ति की नैतिक अभिवृत्ति को परिवर्तित करने में नैतिक पदों के कार्य आदेशों से बिल्कुल अलग नहीं है, इनकी व्याख्या एक विशेष और सूक्ष्म किस्म के सम्वेगात्मक अर्थ के संदर्भ में की जानी चाहिए।

स्टीवेंसन के अनुसार किसी शब्द का सम्वेगात्मक अर्थ अभिवृत्ति को व्यक्त और जागृत करने की वह शक्ति है, जो वह विभिन्न भावनात्मक स्थितियों में इस्तेमाल के इतिहास के कारण हासिल कर लेता है। यह अर्थ वर्णनात्मक अर्थ से अलग है। यह सबसे सरल रूप में विस्मयादिबोधकों में देखा जा सकता है, जबकि और जटिल रूप में इसका 'कविता' में योगदान होता है। इसके अलावा यह आम बोल-चाल की भाषा के कई शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है, जो प्रशंसात्मक और अपमानजनक होते हैं।

स्टीवेंसन के अनुसार सम्वेगात्मक अर्थ के कारण नैतिक निर्णय, आदेशों की तरह सचेत अपील द्वारा नहीं, बल्कि सुझाव की अधिक लचीली प्रक्रिया द्वारा अभिवृत्ति में परिवर्तन लाते हैं। सम्वेगात्मक शब्द जिस किसी वस्तु पर लागू किए जाते हैं, उसे एक तरह से

APPOINTMENTS & MEETINGS

टेप या बोली प्रणाली में प्रस्तुत करते हैं और इस तरह वे लोगों की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाने के लिए उनका नेतृत्व करते हैं, न कि आदेश देते हैं। इसके अलावा, संवेगात्मक शब्द परस्पर प्रभाव की अनुमति भी देते हैं और इस अर्थ में वे एकतरफा आदेशों से अलग होते हैं।

अर्थ के व्यवहार सिद्धान्त के आलोक में स्टीवेंसन ने 'संवेगात्मक अर्थ' की व्याख्या इस प्रकार की है: "संवेगात्मक अर्थ एक अर्थ है, जिसमें अनुक्रिया (सुननेवाले की तरफ से) या उत्तेजक (बोलनेवाले की तरफ से) विभिन्न किस्म की भावनाएँ और अभिवृत्तियाँ होती हैं।"

स्टीवेंसन के अनुसार संवेगात्मक अर्थ को एक 'प्रकार का' अर्थ माना जा सकता है क्योंकि संवेग या भावनाएँ भी मनोवैज्ञानिक अनुक्रिया के व्यापक दायरे में आती हैं जिनके आधार पर सामान्य तौर से ऊपर अर्थ की व्याख्या की गयी है।

संवेगात्मक अर्थ और वर्णनात्मक अर्थ के बीच अंतर करते हुए स्टीवेंसन कहते हैं कि किसी चिह्न का वर्णनात्मक अर्थ उसमें संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रियाएँ उत्पन्न

करने भी लगता है। जहाँ पर 'संज्ञानात्मक' विश्वास करने, सोचने, मानने आदि विशेष मानसिक क्रियाओं के लिए एक सामान्य पद है।

स्पष्टतः, स्टीवेंसन के अनुसार वर्णनात्मक और संवेगात्मक अर्थ के बीच का अंतर मुख्यतः इस पर निर्भर है कि किसी चिह्न की प्रवृत्ति किस किस्म के मनोवैज्ञानिक स्वभाव को जागृत करने की है।

स्टीवेंसन की राय में, किसी शब्द का संवेगात्मक अर्थ शायद ही कभी उसके वर्णनात्मक अर्थ मात्र पर निर्भर करता है, बल्कि वह भावभंगिमा बोलने का स्वर, तीव्र भावनात्मक संदर्भ पर भी निर्भर करता है जिसमें वह पहले से जुड़ा हुआ हो। इसलिए स्टीवेंसन के विचार में, यह समझ पाना आसान है कि क्यों वर्णनात्मक अर्थ में तीव्र परिवर्तन के बाद भी संवेगात्मक अर्थ अपरिवर्तित बना रहता है।

स्टीवेंसन के अनुसार संवेगात्मक अर्थ की यह जड़ता नीतिशास्त्र की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इसलिए वे इस शब्दावली को प्रस्तुत करते हैं: जिस हद तक किसी शब्द का संवेगात्मक अर्थ उसके वर्णनात्मक अर्थ का कार्य नहीं है, बल्कि उसके बगैर या उसमें परिवर्तन के बाद भी बना रहता है उसे स्वतंत्र (Independent) कहा जायेगा।

स्टीवेंसन के अनुसार गैर-रूपक विस्मयादिबोधक शब्दों (non-metaphorical interjection) के संवेगात्मक अर्थ पूरी तरह स्वतंत्र होते हैं जबकि 'लोकतंत्र', 'स्वतंत्रता' और 'उदारता' जैसे अधिकांश शब्दों के संवेगात्मक अर्थ सिर्फ अंशतः स्वतंत्र होते हैं। दूसरी ओर जिस हद तक किसी शब्द का संवेगात्मक अर्थ उसके वर्णनात्मक अर्थ का कार्य है और उसके वर्णनात्मक अर्थ में परिवर्तन के सिर्फ कोई 'अंतराल' के बाद परिवर्तित हो जाता है उसे निर्भर (dependent) कहा जाएगा।

अपनी किताब 'एथिक्स एण्ड लैंग्वेज' के दूसरे अध्याय "वर्किंग मॉडल्स" में स्टीवेंसन ने नैतिक पदों के अर्थ और नैतिक विधि के बारे में चर्चा की है, लेकिन उन्होंने जानबूझकर इस चर्चा को अतिसरलीकृत रखा है। अर्थ के विस्तृत विश्लेषण की बजाय उन्होंने कामचलाऊ मॉडल्स (वर्किंग मॉडल्स) प्रस्तुत किए हैं। ऐसी कामचलाऊ परिभाषाएं, जो यद्यपि स्वीकार्य हैं, नैतिक शब्दों के अर्थों के इतने समान हैं कि इनसे अस्थायी मदद ली जा सके। नैतिक विधियों की चर्चा भी इन कामचलाऊ परिभाषाओं के आधार पर ही की गयी है।

स्टीवेंसन के अनुसार कोई भी ऐसी परिभाषा संतोषजनक नहीं हो सकती है, जो नैतिक पदों के अर्थ को बिना किसी व्याख्या या शर्तों के पूरी तौर से वैज्ञानिक पदों से स्थापित कर दे। ऐसे विश्लेषण के अनुसार मानक नीतिशास्त्र के प्रश्न, विज्ञान के प्रश्नों की तरह सिर्फ विश्वास की सहमति और असहमति को उत्पन्न करते हैं। स्टीवेंसन के विचार में ऐसे विश्लेषणों द्वारा अभिवृत्ति की असहमति की अवहेलना की जाती है और इस तरह से नैतिक पदों के वास्तविक इस्तेमाल की अधिक से अधिक आधी तस्वीर ही प्रस्तुत कर सकते हैं।

स्टीवेंसन के अनुसार हमारी भाषा में कई ऐसे शब्द हैं जिनका वर्णनात्मक अर्थ एक ही है लेकिन संवेगात्मक अर्थों के मामले में स्थिति अलग है। हर शब्द पर उसके संवेदात्मक इतिहास की विशिष्ट छाप होती है।

स्टीवेंसन के अनुसार 'अच्छा' को परिभाषित नहीं किया जा सकता है, इसका अर्थ यह नहीं है कि उसके संवेगात्मक अर्थ का और अध्ययन नहीं किया जा सकता है। 'अच्छा' के संवेगात्मक अर्थ की परिभाषा नहीं दी जा सकती है, लेकिन इसके लक्षणों का वर्णन किया जा सकता है। किसी शब्द का संवेगात्मक अर्थ उसका मनोवैज्ञानिक

MARCH WEEK 12

21 SATURDAY

81-285

FEBRUARY '20

APPOINTMENTS / NOTES

सद्गुणों में "अच्छा" और "सुखद" समान होने के बावजूद भी ये दोनों शब्द बिल्कुल पर्यायवाची नहीं हैं। जब हम कहते हैं कि "सुख अच्छा है", तो इसका केवल यह अर्थ नहीं होता है कि "सुखद वाली" हम सुख के प्रति अपनी पसंदगी व्यक्त कर रहे होते हैं, या यह कह रहे होते हैं कि "सुख प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।" "अच्छा के बारे में सामान्य अन्वेषण" करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि भाषा के अधिकांश शब्दों की तरह "अच्छा" के भी कई अर्थ हैं और अलग-अलग संदर्भों में इसके अलग-अलग अर्थ होते हैं।

मूर ने "प्रकृतिवादी दोष" को या अधिक सटीक कहें तो पर्यायवाची दोष को सुखवाद के विरुद्ध और खासतौर से मिल के विरुद्ध एक औजार के रूप में इस्तेमाल किया है। बाद में मूर ने खुद स्वीकार किया है कि इस दोष को बिना भी सुखवाद का समर्थन किया जा सकता है जैसे कि सिजविक ने किया है। अतः सुखवाद के खण्डन की दृष्टि से "प्रकृतिवादी दोष" का विशेष महत्व नहीं है।

22 SUNDAY